अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नारीवाद

नाम – अंजू त्रिपाठी

स्नातक शोधार्थी, चतुर्थ वर्ष

संस्कृत विभाग

मिरांडा हॉउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश (Abstract):-

भूमिका :-

विषयों का आधान करने में साहित्य सदैव अग्रणी रहा है। इस साहित्य की समग्रता न केवल भाषा एवं भाव से है, बल्कि अनेक ऐसे विषय है जो साहित्य की सौंदर्यता को निखारते है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक नारी का गौरवपूर्ण एवं सर्वोपरि स्थान रहा है। किंचित रूप से साहित्य की यह विडंबना देखी जाती है कि उसने पुरुषों को स्त्रियों की अपेक्षा अधिक सशक्त दिखाया वहीं स्त्रियाँ अधिक कोमल सहज एवं सरल स्वाभाव से युक्त रहीं, क्या वास्तव में वे अधिक सहज एवं सरल स्वाभाव की थी या ये उनकी मर्यादा की सीमा थी? जिसका उन्होंने कभी परित्याग नहीं किया। माता का कर्तव्य हो, पत्नी का दायित्व हो या फिर बहन का कर्तव्य हो, सभी कर्तव्यों के निर्वाह में उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर किया। मातृत्व शक्ति से युक्त नारी को स्वर्ग से भी उत्तम बताया गया –

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"[1]

कालिदास ने स्वयं मालविकाग्निमित्रम् में स्त्रियों की प्रशंसा की –

'निसर्गनिपुणा: स्त्रिया:' □

[1]रामायण, युद्धकाण्ड (124,17)

संरकृत जगत में अनेक ऐसे कवि हुये, जिन्होंने अपनी कवित्व शक्ति से साहित्य को मूर्धन्य बनाया। इस परम्परा में सर्वप्रथम कविकुलगुरु की उपाधि से विभूषित महाकवि कालिदास की गणना की जाती है. महाकवि कालिदान न केवल भारतीय संस्कृति की सनातन परंपरा के सम्पोषक रहे है बल्कि उन्होंने अपने काव्यादान से समस्त जगत को आलोकित किया, उनकी विलक्षण प्रतिभा की परिणति रही है कि काव्य का कोई भी पक्ष उनसे अछूता नहीं रहा।कवि ने ऐसे काव्य का सृजन किया जो युगों युगों तक उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचायक रहेगा। कवि की रचनाओं में अभिज्ञानशाकुंतलम् का स्थान अन्यतम है। इस ग्रन्थ में पुरुवंशीय राजा दुष्यंत एवं कण्व ऋषि द्वारा पालित शकुंतला की कथा का वर्णन किया गया है।यह ग्रन्थ नायिका प्रधान है। मुख्य नायिका के रूप में शंकुतला का व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली है। अन्य स्त्री पात्रों में शकुंतला की सखियाँ प्रियंवदा एवं अनसुया, गौतमी, हंसपादिका तथा अन्य स्त्री पात्रों का चित्रण प्राप्त होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र का विषय "अभिज्ञानशाकुंतलम् और नारीवाद" है जिसका मुख्य उद्देश्य अभिज्ञानशाकुंतलम् का नारीवादी दृष्टिकोण से अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। इस नाटक में शकुंतला, प्रियंवदा आदि अनेक नारी पात्र का चित्रण प्राप्त होता है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से समाज को प्रेरित किया है।

शोध उद्देश्य :- प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य अभिज्ञानशाकुंतलम् की नायिकाओं कों एक स्वाभिमानी, स्वतंत्र विचारों वाली, सहनशीला आदि अनेक ओजस्वी गुणों से युक्त दिखाना है।और नारीवादी परिप्रेक्ष्य में उन्हें सबला नारी के रूप में चित्रित करना है।

शोध प्रविधि:- प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम नाटक के मूल संस्कृत पाठ का सूक्ष्म अध्ययन किया गया जो वर्णनात्मक शोध पद्धति के अंतर्गत आता है।तत्पश्चात् नारीवादी दृष्टिकोण से नायिकाओं की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण किया गया□

अपेक्षित परिणाम :- यह शोधपत्र नाटक में वर्णित स्त्री पात्रों की संवेदनशीलता, सहनशीलता तथा उनके चरित्र का नारीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, साथ ही यह भी स्पष्ट करेगा की कवि का यह ग्रन्थ केवल श्रृंगार प्रधान काव्यात्मक ग्रन्थ नहीं है अपितु इस ग्रन्थ में कवि ने नारी में स्वतंत्रता, स्वाभिमानता,सहनशीलता आदि गुणों का आधान किया है जो आज की नारी के लिए भी अपेक्षित हैं।

बीज शब्द :- कालिदास,अभिज्ञानशाकुंतलम्, नारीवाद,नारी स्वतंत्रता, समानता।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् और नारीवाद

महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुंतलम् एक उच्चकोटि का नाटक है। सहृदयों के हृदय को आह्लादित करने वाले इस नाटक ने भारत ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यही कारण रहा कि इस ग्रन्थ को कवि का सर्वस्व कहा गया –

"**कालिदासस्य सर्वस्वमभिज्ञानशाकुंतलम्**"

यह ग्रन्थ नारी चरित्र के सौंदर्य, संवेदनशीलता तथा उच्च आदर्शों को प्रस्तुत करता है। कवि के ग्रंथों में नारी और प्रकृति का बड़ा ही सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। कहीं नारी प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है तो कहीं प्रकृति उपहार प्रदत्त करके अपनी वात्सल्यता दिखाती है। एक ओर जहाँ प्रकृति ने नारी को सृजन शक्ति से युक्त किया वहीं दूसरी ओर नारी को ममता, करुणा, दया, धैर्यता आदि गुणों से विभूषित किया। समय आने पर स्त्रियों ने अपनी बुद्धिमत्ता और कुशलता से अपने प्रति हुए अन्याय का धैर्यपूर्वक सामना किया।

इस नाटक में शकुंतला, प्रियंवदा आदि अनेक नारी पात्रों का चित्रण प्राप्त होता है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से समाज को प्रेरित किया है। ग्रन्थ के अध्ययन एवं अनुशीलन से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि कवि स्त्री और पुरुष दोनों में समान दृष्टि रखते थे। ग्रंथ का नामकरण भी नायिका के नाम को आधार बना कर किया गया। कवि ने स्त्री पात्रों में केवल रूप सौंदर्य एवं लावण्य का आधान नहीं किया अपितु उनको कर्तव्यनिष्ठता, स्वाभिमानता, अनुकरणीयता आदि गुणों से सजाया। नाटक में शकुंतला अत्यंत कोमल, सौंदर्यमयी एवं आज्ञाकारी नारी के रूप में चित्रित है। परन्तु नारीवादी विमर्श के संदर्भ में प्रश्न यह उठता है कि क्या शकुंतला का व्यक्तित्व सामान्य संरचना के भीतर ही सीमित है या उसमें आत्मसम्मान, स्वाभिमान, धैर्य, सशक्त व्यक्तित्व, संघर्ष, स्त्री की अस्मिता आदि अनेक गुण विद्यमान हैं। प्रियंवदा एवं अनसूया दोनों ही व्यवहार जगत के पर्यवेक्षण में अपने व्यावहारिक ज्ञान का प्रयोग करती हैं, अनसूया प्रौढ़ गंभीर तथा दूरदर्शिनी है□

शकुंतला का नारीवादी विमर्श :-

अपने चरित्र के माध्यम से नाटक को परमसिद्धि प्रदान कराने वाली नायिका शकुंतला का नाटकीय चित्रण अत्यंत आकर्षक एवं आदर्शों से युक्त है। अनुपम सौंदर्य की धात्री शकुंतला के दर्शन मात्र से ही महाराजा दुष्यंत का रोम रोम प्रफुल्लित हो जाता है और वह अनायास ही कहता है –

"**अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।**

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नध्दम्" ॥[2]

अभिज्ञानशाकुंतलम् में शकुंतला को महाकवि ने एक सुशीला, लज्जाशीला एवं सभ्य नारी पात्र के रूप में चित्रित किया है परन्तु जब नारीवादी विमर्श होता है,तब हम उन बिंदुओं पर विचार करते हैं या उन अधिकारों की चर्चा करते हैं जो नारी को पुरुष के समकक्ष ला खड़ा करते हैं। हम बात करते है स्त्रियों की स्वतंत्रता की, समानता की, उनके स्वाभिमान की।

शकुंतला के चरित्र में ये सभी विशेषतायें स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती हैं। वह प्रेम में उदार हृदया है तो अपमान के समय वह साक्षात् दुर्गा की प्रतिमूर्ति है। तपोवन में रहते हुये भी उसे लोक में प्रचलित व्यवहारों का सम्यक रूप से ज्ञान है। भारतीय संस्कृति में 'अतिथिदेवो भव:' इस परम्परा का प्राचीन काल से ही अनुपालन होता आ रहा है। जब राजा दुष्यंत तपोवन में प्रवेश करते हैं तब शकुंतला एवं उसकी दोनों सखियाँ भी इस परंपरा का पालन करती हैं।उसके गुणों की ही समग्रता है कि महर्षि कण्व आश्रम का दायित्व उसे सौंप कर सोमतीर्थ चले जाते हैं.

शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग है। लोपामुद्रा, गार्गी,अपाला आदि अनेक विदुषी ऋषिकायें हुयी, जिन्होंने अपनी ज्ञान ज्योति से समस्त विश्व को आलोकित किया। इससे यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही नारी को शिक्षा प्रदान की जाती थी । कालिदास के समय भी स्त्री के शिक्षित होने के उद्धरण मिलते हैं। शकुंतला का दुष्यंत के लिये प्रणय पत्र लिखना उसके शिक्षित होने को प्रामाणित करता है।यद्यपि लिखने के साधन उस समय उपलब्ध नहीं थे तथापि यह शकुंतला के व्यावहारिक ज्ञान की ही प्रौढ़ता है कि वह कमलिनी के पत्ते पर नखों से अक्षरों को लिखने के लिए उद्यत होती है-

"एतस्मिन् शुकोदरसुकुमारे नलिनीपत्रे नखैर्निक्षिप्तवर्णं कुरु"[3]

शिक्षा और कला का घनिष्ठ सम्बन्ध है, ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।ग्रन्थ की नायिकाएँ न केवल ज्ञान से मण्डित हैं अपितु कलाओं में भी निष्णात हैं। राजा दुष्यंत की प्रथम पत्नी हंसपादिका संगीत कला में सिद्धहस्त हैं -

"जाने तत्रभवती हंसपादिका वर्णपरिचयं करोतीति"[4]

यहाँ वर्ण से तात्पर्य संगीत विद्या से है।

यद्यपि शकुंतला को स्वतंत्र अधिकार प्राप्त हैं, परन्तु नाटक में ऐसे अनेक पक्ष हैं जहाँ पर उसे संघर्षो का सामना करना पड़ता है। गांधर्व विधि से विवाह यह द्योतित करता है कि स्त्री स्वयं अपने वर का चयन कर सकती थी। शकुंतला आश्रम से लेकर राजभवन तक लोकलज्जा का पालन करती है। विवाह प्रस्ताव को स्वीकार करने से पूर्व वह कहती है कि प्रथमत: वह अपनी सखियों से अनुमति लेगी और वह राजा के समक्ष शर्त रखती है कि उससे उत्पन्न

---

[2] अभिज्ञानशाकुन्तलम् (1.21)

[3] अभिज्ञानशाकुन्तलम् (तृतीय अंक)

[4] अभिज्ञानशाकुन्तलम्(पंचम अंक)

हुआ पुत्र युवराज पद को अलंकृत करेगा। यह पक्ष उसकी बुद्धिमत्ता को प्रकट करता है कि वह अपने अधिकारों के प्रति कितनी सजग है।

प्राचीन काल से ही नारी अपने अधिकार के लिए लड़ी है फिर चाहे वो रामायण की सीता हों या अभिज्ञान की शकुंतला। प्रेम के प्रकटन के समय जहाँ एक ओर दुष्यंत ने उसे अनाघ्रात पुष्प, अनाविद्ध रत्न,अनास्वादित मधु इत्यादि विशेषणों से सुशोभित किया-

"अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै।
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादिवातरसम्।।"[5]

वहीं दूसरी ओर जब उसे स्वीकार करने का समय आया तब उसके चरित्र को मलिन बताया। अनेक आक्षेपों के लगने के बाद जब राजा दुष्यंत ने उसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया तब शकुंतला अपने प्रति हुए अन्याय के प्रति आवाज उठाती है। वह दुष्यंत से कहती है, आप आर्यत्व गुणों से हीन हैं वस्तुत: आपने स्वयं को धर्म के आवरण से आच्छादित कर लिया है तथापि आपका अनुकरण कौन ही करेगा, यह तो उसी प्रकार है जैसे तिनको से आच्छादित कुआँ। उसके इस रोष पूर्ण वाक्य से स्वयं राजा दुष्यंत संदेह से युक्त हो जाते हैं. यह पक्ष उसकी स्वभिमानता को स्पष्ट करता है।

स्त्रियाँ स्वभावत: क्षमाशीला प्रवृत्ति की रही हैं, यही विशेषता शकुंतला के चरित्र को और अधिक प्रभावशाली बनाती है. शकुंतला से पुनर्मिलन पर राजा दुष्यंत उसके प्रति किये गए अन्याय के लिए क्षमा -याचना करता है. उदार भावना से परिपूर्ण शकुंतला अपने प्रति हुए अन्याय के लिए राजा को दोष नहीं देती, न ही उन पर क्रोध करती है,वह कहती है कि यह उसके पूर्वजन्म में किया गया विघ्न है जो उदित हो गया था जिस कारण आर्यपुत्र उसके प्रति निर्दयी हुए यह उसकी क्षमाशीला प्रवृत्ति का सर्वोत्तम प्रमाण है।

एकल अभिभावकत्व वर्तमान युग में एक महत्वपूर्ण सामाजिक विषय है, इसका उल्लेख हम अभिज्ञानशाकुंतलम् में भी पाते हैं। दुष्यंत द्वारा अस्वीकृत होने के बाद शकुंतला एकल ही पुत्र सर्वदमन का पालन पोषण करती है, वह विचलित नहीं होती है।यह पक्ष शकुंतला की आत्मनिर्भरता को दर्शाता है। वह अपने उत्तरदायित्व का सम्यक रूप से निर्वाह करती हैं।

अन्य पात्रों का नारीवादी विमर्श:-

शकुंतला के अतिरिक्त नाटक में अन्य स्त्री पात्रों का भी समावेश हुआ है,जिन्होंने अपने व्यक्तित्व से नाटक को रमणीय बनाया। अनसूया और प्रियंवदा यें दोनों शकुंतला की प्रिय सखियाँ हैं ,इनके चरित्र से स्पष्ट होता है कि नारी आपस में सदैव एक दूसरे की पूरक रही, स्त्रियों में सहवेदना की भावना देखी जाती है यही कारण है की दोनों सखियाँ शकुंतला से कहती हैं कि आपस में बटा हुआ दु:ख सहन करने योग्य होता है -

---

[5] अभिज्ञानशाकुन्तलम् (2.11)

"स्निग्धजनसंविभक्तं हि दुःखं सह्यवेदनं भवति"[6]

अनसूया जो अत्यधिक गंभीर स्वभाव की है, परिस्थितियों को अपने अनुसार ढ़ालना उसे सम्यक रूप से आता है वहीं प्रियंवदा भी उसकी सहचरी रहती है। जब दुर्वासा ऋषि शकुंतला को श्राप देकर जा रहे होते हैं तब अनसूया और प्रियंवदा अपनी बुद्धिमत्ता और कुशलता से अनुनय विनय करके ऋषि से श्राप विमोचन का उपाय प्राप्त कर लेती हैं।

दोनों सखियाँ भी शिक्षित हैं जब राजा दुष्यंत शकुंतला को अपनी मुद्रिका देते हैं तब दोनों आपस में उसमें मुद्रित नाम को पढ़ लेती हैं। तपोवन में पालित होने के बाद भी दोनों अपनी बुद्धिमत्ता से समस्त लोकाचारों को पूर्ण कर लेती हैं। विदाई के समय सखियाँ शकुंतला को आभूषण पहनाती हैं यद्यपि वे आभूषणों का प्रयोग करना नहीं जानतीं परन्तु फिर भी अपनी निपुणता और अनुकरणीयता से चित्रकर्म के द्वारा यह कार्य भी संपन्न करती हैं।

ग्रन्थ में गौतमी और अदिति इन दो तापस्विनियों का वर्णन भी प्राप्त होता है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों कि भाँति स्त्रियाँ भी आश्रम जीवन से परिचित थी। तपस्वी जीवन का निर्वाह केवल पुरुषों द्वारा नहीं किया जाता था,अपितु महिलाएँ भी आध्यात्मिक साधना में संलग्न रहती थीं। गौतमी आश्रम की संरक्षिका होने के साथ शकुंतला के प्रति मातृत्व भाव रखती हैं। गौतमी का व्यक्तित्व केवल तप साधना तक ही सीमित नहीं है अपितु उन्हें सामाजिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्व का ज्ञान भी है.

निष्कर्षत: अभिज्ञान की शकुंतला अबला स्त्री के रूप में वर्णित नहीं हैं। ग्रन्थ की दूसरी स्त्री पात्र भी स्वतंत्र विचारों वाली, धैर्यशीला, स्वाभिमानी, परिस्थितियों का सामना करने वाली हैं। कालिदास ने ग्रन्थ में नारी पात्रों को जिन गुणों से सुशोभित किया गया है, वे गुण आज भी एक महिला के लिए अपेक्षित हैं। यदि शकुंतला प्रारम्भ में ही हार मान लेती तो क्या वो महारानी के पद को अलंकृत कर पाती? जिस प्रकार शकुंतला ने विषम परिस्थितियों का धैर्यपूर्वक सामना किया उसी प्रकार आज की नारी भी जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सकती है। वस्तुत: संघर्ष तो मानव जीवन का वो हिस्सा है जिससे गुजरने के बाद मनुष्य और अधिक बलिष्ठ और परिपक्व हो जाता है□

संदर्भित ग्रन्थ सूची :-

• कालिदास, *अभिज्ञानशाकुंतलम्* । सम्पादक- डॉ शिवबालक द्विवेदी।जयपुर : हंसा प्रकाशन, 2021□

• कालिदास, *अभिज्ञानशाकुंतलम्* । सम्पादक- डॉ कपिलदेव द्विवेदी।इलाहाबाद : रामनारायण, 1962 □

[6] अभिज्ञानशाकुन्तलम् (तृतीय अंक)

• कालिदास, *अभिज्ञानशाकुंतलम्*। सम्पादक – डॉ वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी। आगरा :महालक्ष्मी प्रकाशन

• डॉ पुष्पा गुप्ता, संस्कृत साहित्य – विविध आयाम। दिल्ली : ईस्टर्न बुक लिंकर्स। 2012।

• सिंह, डॉ इन्दुमति. "*कालिदास की कृतियों में प्रतिबिम्बित नारी.*"

International Journal of Jyotish research

• द्विवेदी, डॉ भारत भूषण. "*भारतीय नारी के विविध आयाम*"

International lournal ofScientifc Research in Science and Technology

• गुप्ता, मनीषा. "*कालिदास के महाकाव्यों में नारी चित्रण*".International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

• रानी सुष्मिता. "*कालिदास के रूपकों में प्रमुख स्त्री पात्रों की विनियोजना का वैशिष्ट्य.*"

• चौहान, डॉ उषा.भास, *कालिदास और भवभूति के रूपकों के प्रमुख नारी पात्र*।दिल्लीः ईस्टर्न बुक लिंकर्स। 2021

• राधावल्लभ त्रिपाठी. *संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श.* दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ। 20121

• सुमन. *संस्कृत नाटकों में नारी.*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education,Vol. 16

• "*The Social Exclusion and Inclusion of Shakuntala*"- Dr. Poonam Kimta चौहान.

•Aarzoo,dr. Manju. "Women And Nature in Kalidasa's 'Abhijnana Shakuntalam".

• Dr. Pritilaxmi Swain. "*Social Values of Women in Abhijnanasakuntalam: An*

*Analysis".*International Research Journal of Interdisciplinary & Multidisciplinary Studies (IRJIMS).Volume-I, Issue-I, February 2015